ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

# महादेवी वर्मा का गीतिकाव्य

KEY WORDS:

डॉ. सुमन कुमारी

एसो0प्रोफेसर, हिन्दी राजकीय महाविद्यालय टनकपुर, चम्पावत।

गीतिकाव्य उस आत्मानुभूति व्यंजक कविता को कहते है जिसमें आन्तरिक मनोभावी की लघु आकार में संगीतमयी सुकुमार अभिव्यक्ति होती है। गीतों में सम्बन्धित कवि अपने व्यक्तिगत जीवन के सुख–दुख की अनुभुति की अभिव्यंजना करता है। महादेवी के गीतों में उनकी अर्न्तभावना अभिव्यक्त हुई है। इस सन्दर्भ में उन्होने यामा में लिखा है– मेरे गीत मेरा आत्मनिवेदन भाव है– उनके विशय में कुछ कह सकना मेरे लिए सम्भव नहीं। इन्हे मै अपनी व्यकिंचन भेंट के अतिरिक्त कुछ नहीं मानती। महादेवी की गीति वैयक्तिक सुख:दुख के साथ –साथ जगत की अकुल व्याकुल वेदना से भी सम्पृक्त है। महादेवी के गीतों में दोनों स्थितियॉ प्रायः एकाकार हो गयी है और जब उनके गीतिकाव्य की सुमधुर स्वर लहरी प्रवाहित होती है, तब उसमें वैयक्तिक अनुभूतियों की विभाजक रेखा खीचना दुश्कर हो जाता है–

''विरह का जलजात जीवन विरह का जलजात।
वेदना में मिला जन्म करूण में मिला आवास
अश्रु चुनता दिवस इसका अश्रु गिरती रात,
जीवन विरह का जलजात।''

प्रस्तुत गीत में व्यक्ति एवं जगत की अनुभुति एकरस होकर व्यक्त हुई है जिसमें व्यक्तिगत सुख–दुख के साथ–साथ वि व की करूणा द ा का चित्रण हुआ है। किन्तु इसकी अभिव्यक्ति इस तरह से हुई है, जैसे यह कवयित्री के वैयक्तिक जीवन का ही चित्र हो। उनकी अपनी दुखात्मक अनुभुति हो अथवा उनकी आत्मा ही विगलित हो व्यक्त हो रही हो। रचयित्री अपने युग की परिस्थितियों का चित्रण करते समय अपने को भुला देती है। उसके सुख–दुख सामाजिक सुख–दुख हो जाते है।

गीति काव्य में सदैव लघु आकार के अन्तर्गत मार्मिक भावों की ही अभिव्यक्ति की जाती है। महासिद्ध कर दिखाया है। यद्यपि महादेवी के कुछ गीत आकार की दृश्टि से दीर्घ है परन्तु उनके गीत दीर्घ होते हुए भी अरोचक नही प्रतीत होते है। इसका कारण यह है कि उनकी दीर्घता भाुश्कता से युक्त नहीं है, अपितु कल्पना की रंगनी से युक्त है।

संगीत गीतिकाव्य का मूलाधार है। क्योकि बिना संगीत के वह आगे नहीं बढ़ता। बिना संगीत के उसके पद नहीं चलते और बिना संगीत उसका निर्माण नहीं होता। संगीत की सुमधुर भाव लहरियों पर चढकर की उसके चरण थिरकते है। संगीत के ही कारण उनमें प्राण चेतना का संचार होता है। यह कहने की आव यकता नहीं है कि महादेवी के गीत संगीत के अक्षय भण्डार है। उनके गीत संगीतात्मकता के गुण से परिपूर्ण है।

लय संगीत की आत्मा है। लय के बिना संगीत अधूरा रहता है। इस न वर जगत के सारे कार्य–व्यापार एक पर लय ही चलते रहते है। काव्य में सुकोलता एवं लालित्य लय के द्वारा ही आता है। गीतों के लिए भी लय आव यक है। महादेवी ने अपने गीतों में लय का सुन्दर चित्रण किया ह–

''दिया क्यों जीवन का वरदान
इन्द्र धनुश सा धन अंचल में
तुहिन–बिन्दु सा किसलय दल में
करता है पल–पल में देखो
मिटने का अभिमान।
दिया क्यों जीवन का वरदान।''

निश्कर्श रूपेण कह सकते है कि महादेवी की कविता गीतिकाव्य की सम्पूर्ण वि िश्टताओं से ओत–प्रोत है।
उनके गीतकाव्य में सहज स्वाभाविकता है, क्योकि वह आयास साध्य नहीं है, उसमें सहज संगीतात्मकता है क्योंकि वह संगीत के मधुर आरोह–अवरोह एवं स्वरताल के कोमल तारतम्य से परिपूर्ण है और उसमें ि ाल्प सौश्ठव है, क्योंकि वह कोमलकान्त पदावली से युक्त है। अपने इसी वै ि श्ट्य के कारण महादेवी जी का गीतिकाव्य सर्वाधिक प्रभावोत्पादक, सर्वाधिक मनोभाव–भिव्यंजक है, सर्वाधिक भावप्रेश और सर्वाधिक गयात्मक माना जाता है। इसीलिये उनको हिन्दी की सर्वश्रेश्ठ गीत–कवियत्री कहा जाता है।

सहायक ग्रन्थ सूची–

1. यात्रा– श्रीमती महादेवी वर्मा
2. छायावाद– श्री नामवर सिंह
3. गीतकाव्य संग्रह– श्रीमती महादेवी वर्मा